* अथ *

महामृत्युञ्जय जपविधिः

भाषा टीका सहिता

पार्थिवेश्वर पूजन, मृत्युञ्जय कवच, व महामृत्युञ्जयस्तोत्र, शताक्षरा विधान भाषा टीका सहिता।

प्रकाशक—श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार,
५२७ ए/२, कक्कड़ नगर, (दरियाबाद), इलाहाबाद।

जनता बुकस्टाल, मूलगंज कानपुर।

मूल्य रु० ४-००

अथ महामृत्युञ्जय-कवच-स्तोत्र-समन्वितं

बृहद्

महामृत्युञ्जय-जप-विधानम्

(हिन्दी भाषा, टीका साहितम्)

●

काशीनाथ शर्मा, गौड़

त्रिलोचनघाट, वाराणसी १

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार,

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर, इलाहाबाद ।

श्री जनता बुकस्टाल-मूलगंज-कानपुर

मूल्य रु० ४-००

प्रकाशक

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार,

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर. इलाहाबाद।

ब्राच– जानसेनगंज, इलाहाबाद।

श्री जनताबुक स्टाल

मूलगंज-कानपुर

Printed by—

Star Printers

287, Daryabad, Allahabad

शरणं मे गिरिराजकन्यका शरणं तरुणेन्दु शेखरः ।
शरणं पुनरेव तावुभौ शरणं नान्यदुपैति दैववतम् ॥

भगवान् शंकर अनादि काल से सभी युगों में तपस्या से अधिक प्रसन्न होकर सर्वदा देव, असुर और मानवों को मनचाहा वरदान देते आये हैं। वही भगवान् शंकर आषुतोष इस कलिकाल में अल्प जीवन पाने वाले मनुष्यों पर थोड़ी सी तपस्या रूप-भजन-पूजन अर्चन रुद्राभिषेक, रुद्रयज्ञ आदि से प्रसन्न होकर--मनवांछित वर के स्वरूप में पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, सम्पत्ति आदि देते हैं। तथा साथ ही साथ अल्पमृत्यु को बदलकर दीर्घजीवन प्रदान करने वाला इस अमृतसंजीवनी महामृत्युंजय मंत्र रूप से सर्वदा श्रद्धालु भक्तों को दीर्घजीवन प्रदान करते हैं।

ऐसी अमूल्य निधिरूपी मंत्र के बारे में लिखना पड़ता है कि सर्व साधारण की सुविधा तथा सरलता का ध्यान रखना तो दूर रहा—बहुत सी पुस्तकों में इतना आडम्बर भर दिया है कि अल्पज्ञ जन इसमें लाभ उठाने के बजाय संशय और भ्रम में पड़ कर उपासना करते हैं और बाद में कह देते हैं उपासना में कुछ लाभ नहीं है। ऐसा कहना हमारी मति-मन्दता है। कारण जो उपासना (मंत्र पाठ) विश्वास श्रद्धा के साथ नहीं किया गया हो तो फल कहाँ से हो।

इसलिये इस पुस्तक को सर्वोपयोगी लाभ की दृष्टि से जनता बुक स्टाल कानपुर की विशेष रुचि के अनुसार लिखी है। जिससे जनता की सेवा हो सकें।

काशीनाथ शर्मा गौड़
वाराणसी १

नृसिंह चतुर्दशी
२४।५।७५

महामृत्युञ्जय के उपयोगी विषय

महामृत्युञ्जय के प्रयोग निम्न कार्यों में अधिक उपयोगी हैं।

१—जन्मकुण्डली, लग्नकुण्डली, वर्षकुण्डली, गोचरकुण्डली, दशा, महादशा, अन्तर्दशा, स्थूलदशा, सूक्ष्मदशा में होने वाले सूर्यादि नवग्रहों द्वारा शरीर पीड़ा हो।

२—महामारी आदि का प्रकोप हो।

३—इष्ट-मित्रों से वियोग की सम्भावना हो या हो गया हो-भाई-बन्धु से विद्रोह हो। दोषारोपण या कलङ्कित हो-चित्त उद्विग्न हो, द्रव्य नष्ट होता हो, रोग दीर्घकाल से पिण्ड न छोड़ता हो।

४—विवाह-मेलापक में नाड़ी आदि दोष हों, षडाष्टक दोष हों।

५—राजभय, चौरभय, परमंत्र-परयंत्र-परतंत्र भय हो।

६—मन धर्म से विचलित हो, अशान्ति हो।

७—त्रिदोष, दुर्निवार्य रोग, ज्वरपीड़ा, दुःस्वप्न होते हों। आदि कारणों में महामृत्युञ्जय जप करे या ब्राह्मण से करावें।

कार्यानुसार जपसंख्या

किसी प्रकार से महामारी-जैसे-हैजा-प्लेग, शीतला, या अन्य प्रकार के महा उपद्रवों की शान्ति के लिये महामृत्युञ्जय का १ (एक) करोड़ जप कराना चाहिये। या सामान्य रोग हो, दुःस्वप्न होते हों,

पुत्र प्राप्ति के लिए, स्त्री-प्राप्ति के लिये—पति-प्राप्ति के लिये, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये, मान-सम्मान प्राप्ति के लिये ईष्टसिद्धि-या मनशान्ति के लिये १। सवालाख जप कराना चाहिये। अपमृत्यु का भय हो, संदिग्धावस्था, भय की आशङ्का, कलङ्कित अवस्था में १० दसहजार जप कराना चाहिये। यात्रा आदि में भय उपस्थित हो तो १एक हजार जप कराना चाहिए।

विशेष

(जपात्मक)

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगितम्॥

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन-अर्चन करना चाहिये। मनमानी ढंग से ऊट-पटांग करना या कराना हानिप्रद होता है लाभकारी नहीं।

प्रयोग कराने के समय-शुभ मुहूर्त, चन्द्र-तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान-पुरश्चरण-प्रयोग—कराना चाहिये। प्रयोग कराते समय शिव-मन्दिर-देवालय-सिद्धस्थान-नदीतट-विल्व,अश्वत्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर-लीप-पोतकर अनुष्ठान आरम्भ करें।

देवालय-सिद्धस्थान-शिवमन्दिर में तो पार्थिवेश्वर की आवश्यकता नहीं है—किन्तु और सभी स्थानों पर पार्थिवेश्वर शिवलिङ्ग निर्माण कर के ही महामृत्युञ्जय आदि का जप विधान सहित करना कराना चाहिए।

ब्राह्मण द्वारा करावें तो प्रयोगविधि के ज्ञाता, उदार, दयालु, परोपकारी, संतोषी देवाराधक जितेन्द्रिय विषम संख्यात्मक ब्राह्मण होने चाहिये। यजमान भी शुद्धचित्त, शांत, विश्वास रखने वाला, संयमी, जब तक अनुष्ठान होता रहे जितेन्द्रिय होकर रहे।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए—इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों ने प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट-फेर-कमी-वेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होनेपर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

यदि पुरश्चरण एक ही दिन का हो हवन करने में कठिनाई हो हवन न हो सके तो दशांश जप अधिक कराना चाहिए। श्रद्धा-भक्ति-विश्वास के साथ इस कार्य को करने से सर्वदा सफलता ही मिलती है।

विधर्मियों के संसर्ग से विधर्मी भाषा का पठन-पाठन करने से नास्तिकता की वृद्धि हो गई है और इन्हीं कारणों से मनुष्य सदनुष्ठान से विचलते हैं और श्रद्धा-भक्ति व विश्वासहीन रहते हैं जिन कारणों से उनको फल मिलना तो दुर्लभ हो जाता है किन्तु उनके--कटुवचनों से और भी आपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

(होमात्मक)

आहुति के अनुसार-वेदी (स्थंडिल) बनावे उस पर कुशकण्डिका, क्रमानुसार-अग्निस्थापन कर शास्त्रोक्त विधि से यथाशक्ति यथोचित द्रव्यों से हवन कराना चाहिए, हवनसामग्री-सामान्यतया:यव चावल, तिल-घी, खांड़ और मेवा यही प्रधान हैं। परन्तु कामना विशेष हो तो—हवनद्रव्य-सवा लक्ष्य जप हो तो—विल्वफल-तिल-खीर-पीलीसरसों, दूध-दही-दूब से आहुति दे। बड़, पलास, खैर की लकड़ी-मध (शहद) में डुबो कर आहुति दे। रोगशान्ति के लिए—शत्रु से विजय प्राप्ति के लिए, धन-सम्पत्ति और पुत्र-कलत्र-पौत्रादि की दीर्घायु कामना के लिए गुरुच का ४-४ अंगुल का टुकड़ा लेकर उसी का हवन करावे। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए विल्वफल का हवन करावे। ब्रह्मत्वसिद्धि के लिए-पलाश की समिधा का हवन घृत सहित करावे। धन की प्राप्ति के लिये, वट की लकड़ी का हवन, शोभावृद्धि के लिये तिलों की आहुति, शत्रुनाशार्थ सरसों की आहुति दे। यशस्वी बनने के लिये खीर की आहुति करावे। कृत्या (पिशाच बाधा) का नाश कराने के लिये-मृत्यु भय दूर करने के लिये-दही से आहुति करावे, रोगक्षय की कामना के लिये ३-३ दूर्वा से आहुति दे। ज्वरशान्ति के लिये–अपामार्ग की लकड़ी और खीर की आहुति दे। अपने बश में करना हो तो गाय का दूध-घी से दूर्गा की आहुति देवे सर्व रोगों की शान्ति के लिये काश्मरी की ३-३ समिधा तथा दूध और चावल की आहुति दिलावे। मंत्रोच्चारण के साथ अन्त में स्वाहा शब्द उच्चारण करके आहुति देवें। हवन समाप्ति के बाद अर्घ पात्र में या और पात्र में जल-दूध मिश्रित रखकर अजलि से तर्पण करे और उसी प्रकार तर्पण समाप्त होने पर दूर्वाकुंरों से अपने ऊपर-या यजमान के ऊपर मार्जन करें।

सङ्कल्पः—

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये-मनः संकल्प या यजमान द्वारा संकल्प लेकर तब कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान में लगना चाहिये।

संकल्पः— ॐ तत्सदद्यैतस्य० महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे, अमुक मासे, अमुकपक्षे अमुक तिथौ. अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं-अमुकशर्माहं ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराण तन्त्रोक्त फलप्राप्तये मम जन्मवर्ष-मास-दिनगोचराष्टकऽवर्गदशान्तर्दशादिषु ये अनिष्ट फलकारकाः ग्रहास्तेषामनुकूलतासिद्ध्यर्थं सकल-आधि-व्याधि-प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुर्विपुल-बल पुष्टि नैरुज्यादि सकलाभीष्टसिद्ध्ये श्रीमन्महामृत्युंजय प्रीत्यर्थं यथा (शत-सहस्र-अयुत-लक्षादि) संख्याक श्रीमन्महामृत्युंजय मन्त्र जप महं-करिष्ये। (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)

(वा-विषूचिकादि जनमारोपसर्ग शांत्यर्थवा-वृष्टिकामार्थ वा अमुकाभियोग निवृत्यर्थ। वा दुःस्वप्न निरसनार्थं। वा-निर्विघ्न दिग्यात्रा सिद्ध्यर्थं प्रति सम्मुख शुक्रदोष दूरी करणार्थं। वा काकमैथुन दर्शनादि सूचित सर्वारिष्ट निवृत्यर्थं। वा पल्लीपतन-सरटारोहण अमुक दुष्टांग स्फुरण जनित-अशुभफल विनाशार्थं। वा-दीर्घायुः पुत्र प्राप्त्यर्थं। यथेच्छ धन

लाभार्थं । अमुक कामना सिद्ध्यर्थं अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युंजयमन्त्रजपमहं करिष्ये-(वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये ।)

पार्थिवपूजा विधिः-

आचम्य-प्राणानायम्य, देशकालौसंकीर्त्य—

आचमन प्राणायाम करके संकल्प करे—

संकल्प—अत्राद्य महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ-अमुकवासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं अमुक कामोहं श्री पार्थिवेश्वर शिवलिंग पूजनमहं करिष्ये ।

विभूति रुद्राक्ष धारणं कृत्वा-(भस्म और रुद्राक्ष माला धारण करे)।

भूमिप्रार्थना—सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपं मृत्तिकामिमाम् । ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे ॥ ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः ॥

मृत्तिका ग्रहण मंत्रः—ॐ हराय नमः (शुचिस्थानाद् मृदमाहृत्य)।

मृत्तिका में जल छोड़ने का मंत्र—वं इत्यमृतवीजाभि मंत्रित जलप्रक्षेपेण संपीड्य ।

शिवलिंग बनाने का मंत्र—ॐ महेश्वरायनमः इति लिंगं कृत्वा। स्वपुरतः—लिंग स्थापन करे—ॐ शूल पाणये नमः इति पीठादौ प्रतिष्ठाप्य-प्राणानायम्य।

विनियोग-जल से छोड़े—

ॐ अस्य श्री शिव पंचाक्षर मंत्रस्य वामदेव ऋषिरनष्टुप् छंदः श्री सदाशिवो देवता ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम सांबसदाशिव प्रीत्यर्थे न्यासे-पूजने जपे विनियोगः

न्यास मंत्रः—ॐ वांमदेव ऋषयेनमः सिरसि,ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। ॐ श्री सांब शदाशिव देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे।

ॐ नं तत्पुरुषाय नमो हृदये। ॐ मं अघोराय नमः पादयोः। ॐ शिं सद्यो जाताय नमो गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानायनमो मुखे।

ॐ ॐ अंगुष्ठायनमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिर से स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचायहुं। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

अथध्यानम्--

ॐध्यायेन्नित्यं महेशं राजतिगिरि निभं चारुचन्द्रा वतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

इतिध्यात्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥

प्राणप्रतिष्ठा मंत्र—ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रिया मय शरीरम्, प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देव प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरशि । ऋग्यजुः सामच्छन्दसेभ्यो नमो मुखे । प्राणाख्य देवतायै नमो हृदि । आं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तयः नमः पादयोः । क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । इति कृत्वा– ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हं सः शिवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य जीव इह स्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि । ॐ वाङ्मनस्त्वकचक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा शिवलिङ्गं स्पृशन् ।

(प्राणप्रतिष्ठा करके शिवलिंग स्पर्श करे आवाहन करे) ।

ॐ भूः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि ॐ भुवः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि । [इत्यावाह्य-]

संक्षिप्त पूजनम्—ॐ पिनाकधारिणे नमः इति स्नानम् । ॐ शिवाय नमः इति गन्धं, अक्षतं, विल्वपत्रं-पुष्पं-धूपं-दीपं-नैवेद्यं समर्पयामि । ॐ पशुपतये नमः नीराजनं समर्पयामि । ओं महादेवाय नमः इति संहार मुद्रया विसर्जनम् ।

विशेष— इस प्रकार प्रतिदिन पार्थिव पूजन करना चाहिये—यदि साथ में जप भी करते हों तो प्रथम जप करके तब संहारमुद्रा से शिवलिंग का विसर्जन कराना चाहिए ।

अथ-शिवपूजा विधिः

शिव मन्दिर में जप करना हो या रुद्राभिषेक करना हो या सहस्रघटाभिषेक करना हो तो शिव मूर्ति का पूजन क्रम लिखते हैं—

शिवालये, देवालये वा पार्थिवेश्वर शिव सन्निधौ उपविश्य पूजनसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य । आचम्य-प्राणानायम्य-देशकालौ संकीर्त्य-अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा अमुक कामोऽहं शिव पूजां करिष्ये । तत्रादौ गणेश गौर्यादिनां नाममन्त्रेण सम्पूजनं शिवपूजनं च कुर्यात् ।

शिवालय, देवालय वा पार्थिवेश्वर शिवलिंग के समीप बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन-प्राणायम करे-संकल्प पढ़े । गणेश गौरी का नाममन्त्र से पूजन करके शिवलिंग का पूजन करे ।

पूजोपचार क्रमः—

१-अष्टात्रिंशद उपचाराः—

अर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं मधुपर्कमुपस्पृशम् ।
स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामनं चोपवीतकम् ॥ १ ॥

पुनराचमनं भूषा दर्पणालोकनं ततः ।
गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात् ॥ २ ॥

पानीयं तोय माचामः हस्तवासस्ततः परम् ।
ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः ॥ ३ ॥

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिश्चैव प्रदक्षिणा ।
पुष्पांजलि नमस्कारावष्टात्रिंशत्समोरितः ॥ ४ ॥

क्वचित् त्रयोविंशत्युपचाराः—

अत्रएता एव गृहीता । परञ्चैताः पूजाः षोडशांग न्यासपूर्विका ग्राह्याः ।

पूजायां ग्राह्य पुष्पादीनिः—

समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् ।
पूजायां पंचरात्रं स्या दशरात्रं च विल्वकम् ॥ १ ॥

एकादशाहं तुलसी नैव पर्य्युषिताभवेत् ।
जाती शमी कुशा कङ्गुमल्लिकाकरवीरकम् ॥ २ ॥

चम्पकं-वकुलं चैव पद्म विल्वं पवित्रिकम् ।
एतानि सर्व देवानां संग्राह्याणि समानि च ॥ ३ ॥

२—षोडशोपचार क्रमः—

आसनं स्वागतंचार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम् ।
मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानि च ॥ १ ॥

सुगन्धः सुमनो धूपो दीपो नैवेद्य एव च ।
माल्यानुलेपने चैव नमस्कारा विसर्जनम् ॥ २ ॥

नागदेव क्रमः—

आवाहनासने पाद्यमर्घ्यामाचमनीयकम् ।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिःक्रमात् ॥ १ ॥

धूपं दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणम् ।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः ॥ २ ॥

३-दशोपचार क्रम:—

अर्घ्यं पाद्यंचाचमीनीयं स्नानं वस्त्र निवेदनम् ।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात् ॥ १ ॥

४-पंचोपचार क्रम:—(जाबालि:)

ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम् ।
नीराजनं प्रणामश्च पंचपूजोपचारक: ॥ २ ॥
(अन्यच्च)—गन्धपुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं इति च क्रमात् ॥ २ ॥

पाद्यम्—ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथोयेऽअस्य सत्वानो हंतेभ्योऽकर नम: ॥
ॐ शिवायनय: पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम्—ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह ।
बृहत्युष्णीहा ककुप्सूचीभि: सम्यन्तुत्वा ॥
ॐ शिवाय नम: अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनम्- ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ॥
ॐ शिवायनमः आचमनं समर्पयामि ॥

स्नानम्—ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि ।
वरुणस्यऽऋऽत सदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॥
ॐ शिवाय नमः जलस्नानं समर्पयामि ॥

दुग्धस्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्त रिक्षेपयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
ॐ शिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि ॥

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषि तारिषत ॥
ॐ शिवायनमः दधिस्नानं समर्पयामि ॥

घृतस्नानम्- ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसा पावानः ।
पिबतानारिक्षस्य हवि रसि स्वाहा ॥

दिशः प्रदिशऽआदि शो व्विदिशऽउद्दि शोदिग्भ्यः स्वाहा ।
ॐ शिवाय नमः घृतस्नानम् समर्पयामि ॥

मधुस्नानम्- ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।
मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्पार्थिव ꣳ रजः । मधुद्यौ रस्तुनः पिता ॥
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावोभवन्तुनः ।
ॐ शिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥

शर्करास्नानम्- ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम ।
अपा ꣳ रसस्य योरसस्तम्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥
ॐ शिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ॥

पंचामृतस्नानम्—ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्।
ॐ शिवाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि—

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणि वालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥
ॐ शिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

वस्त्रोपवस्त्रम्—ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवो वपः।
ॐ शिवाय नमः वस्त्रोपवस्त्रंसमर्पयामि—

यज्ञोपवीतम् —ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौव्वेनऽआवः। सवुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥
ॐ शिवाय नमः यज्ञोपवीतम् समर्पयामि

गन्धम्— ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः कपर्दिने।

ॐ शिवाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षतम्— ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च। मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

ॐ शिवाय नमः अक्षतान समर्पयामि ।

पुष्पमालां— ॐ नमः पार्याय चा वार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः ॥

ॐ शिवाय नमः पुष्पमालां-पुष्पंसमर्पयामि ।

विल्वपत्रम्—ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्या च नमो धृष्णवे।

ॐ शिवाय नमः विल्वपत्रम् समर्पयामि।

धूपम्——ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते चे नमो ह्रस्वाय।

ॐ शिवाय नमः धूपं समर्पयामि।

दीपम्——ॐ नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्याय चा वसवन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च॥

ॐ शिवाय नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्——ॐ नमो ज्येष्ठाय च नमः पूर्वजाय चा परजाय च नमो मध्यमाय चाप्रगल्भाय च नमो जघन्याय च सोम्याय च।

ॐ शिवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

आचमनम्——ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्। उर्व्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमा मृतात्॥

ॐ शिवाय नमः आचमनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्--ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरा महेमतीः। यथा नः शमसद् द्विपदे चातुष्पदे विश्वं पुष्टम् ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥

ॐ शिवाय नमः तांबूलम् समर्पयामि

दक्षिणां--ॐ हिरण्यगर्भः समवर्ततताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्या मुते मां कस्मै देवाय हाविषा विधेम।

ॐ शिवाय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

शिव नीराजनार्तिः

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालयं नित्यं कृपया जगदीशा॥
हर हर हर महादेव॥ १॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंज वने गहने॥

कोकिल कंजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कला कलापं नृत्यसि मद सहिता॥
हर०महादेव॥ २॥
तस्मिन् ललित सुदर्शन शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे गौरीमुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्॥ हर०महा० ३॥
कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलि विषधर कण्ठ युतम्॥
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालं।
डमरू त्रिशूल पिनाकं करधृत नृ कपालम्॥ हर०महा० ४॥
मुण्डै रचयति मालां पन्नग उपवीतं।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्॥
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वज रूपं तापत्रय हरणम्॥ हर० महा०॥ ५॥
ॐ शिवाय नमः नीराजनं समर्पयामि॥

पुष्पांजलिम् हस्ते फल पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देघास्तानि धर्माणि प्रथमान्या सन् ।
तेहना कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।
ॐ शिवाय नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

प्रदक्षिणा—

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः ।
तेषा ๆ सहस्र योजनेबधन्वानि तन्मसि ॥ (वैदिक)
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

क्षमा प्रार्थना—

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्म जं वा,
श्रवण नयन जं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव ! शम्भो ॥

ॐ शिवाय नमः क्षमा प्रार्थना समर्पयामि ।

अनेन पार्थिवेश्वर शिवपूजनाख्येन कर्मणा भगवान साम्बसदाशिव प्रीयतां नमम् ॥
काशीनाथ शर्मा गौड़ द्वारा पार्थिवेश्वर शिवपूजन भा० टी० सविधि समाप्त ।

।। अथ महामृत्युञ्जयजपविधिः ।।

कृत नित्यक्रियो जपकर्ता स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य धृत रुद्राक्षभस्म-त्रिपुण्ड्: आचम्य । प्राणानायम्य ।

जपकरने वाला अपने आसन पर पूर्वमुख वा उत्तर मुख करके भस्म कात्रिपुण्ड् लगाकर रुद्राक्ष माला धारण करके बैठे । आचमन प्राणायाम करें ।

संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यः श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयेपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वतेवाराह कल्पे वैवस्त-मन्वन्तरे अष्टामविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे-विक्रमशके बौद्धावतारे असुकऋतौ अमुक-मासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुकराशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान-

स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहग्रण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः दासो) हं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्ग दशान्तर्दशादिषु चतुर्थाऽष्टमद्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तमएकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री महामृत्युंजय रुद्रदेवता प्रीत्यर्थं यथा (शत सहस्र अयुत लक्ष कोटयादि) संख्याक श्री मन्महामृत्युंजय मन्त्र जप महं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)।

विनियोग—हाथ में जल लेकर पढ़ कर छोड़ें।

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजयमन्त्रस्य वसिष्ट ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीत्र्यम्बक-रुद्रो देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि यासः—

ॐ बसिष्ठऋषयेनमः शिरसि। अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे॥ श्रींत्र्यम्बकरुद्रदेवतायै नमो हृदि। श्रीं बीजायनमो गुह्ये॥ ह्रींशक्तये नमः पादयोः। इति ऋष्यादिन्यासः॥

अथकरन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्रायशूल-पाणये स्वाहा-अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौंऊं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय

अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा-मध्यमाभ्यां वषट् ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम् । ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भवगते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयायज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् । इति करन्यासः ।।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बक ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा । हृदयाय नमः । ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय । शिरसे स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा ।। शिखायै वषट् ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रां कवचाय हुं ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ॐ ह्रौ ॐ जू सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवतो रुदाय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष-रक्षअघोरास्त्राय फट् ।। (इति हृदयादिन्यासः)

अक्षरन्यासः—त्र्यं नमः दक्षिण चरणाग्रे । बं नमः । कं नमः, यं नमः, जां नमः दक्षिण चरण सन्धि चतुष्केष । मं नमः वाम चरणाग्रे । हें नमः, सुं नम, नमः, गंनमःधि नमः, वाम

चरण सन्धिचतुष्केषु। पुं नमः गुह्ये। ष्टि नमः, आधारे। वं नमः जठरे। द्धं नमः हृदये। नं नमः कण्ठे। ॐ नमः दक्षिणकराग्रे। वां नमः। रु नमः। कं नमः। भि नमःदक्षिणकरसन्धि चतुष्केषु। वं नमः वामकराग्रे। ब नमः, धं नमः नां नमः मृं नमः वामकरसन्धि चतुष्केषु। त्यों नमः वदने। मुं नमः, ओष्ठयोः। क्षीं नमः घ्राणयोः। यं नमः दृशोः। मां नमः श्रवणयोः। मृं नमः भ्रुवोः। तां नमः शिरसि। (इति अक्षरन्यासः)

अथ पदन्यासः—ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धि दृशोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं कण्ठे। मिवं हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय ऊर्वोः। मां जान्वोः। अमृतात् पादयोः। (इतिपदन्यासः)

अथध्यानम्—चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्,
हस्ताब्जेन दधत्सु दिव्य ममलं हास्यास्य पङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वाग्नि विलोचनं करतले पाशाऽक्षसूत्रांकुशां,
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युंजयं संस्मरे॥ १॥

अर्थ—अपने दोनों हाथों में धारण किये दोनों कुम्भों से निकलते जल से अपने मस्तक का सिंचन करते हुए अपनी गोद के दोनों हाथों पर कलश लिये एक हाथ में स्फटिक माला, दूसरे हाथ में मृग, तीसरे हाथ में कमल धारण एवं मस्तक पर चन्द्र से अमृत बहते अपने

शरीर का अमृत से सिंचन करते त्रिनेत्रधारी शिव गिरिजा सहित श्रीमृत्युंजय भगवान की आराधना करता हूँ।

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य । ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे।

गन्धं—ॐ लं पृथिव्यात्मकं समर्पयामि ।

धूपं—ॐ हं आकाशात्मकं धूपं समर्पयामि।

दीपं—ॐ रं तेजोरूपं दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं—ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ।

मंत्रपुष्पांजलिः—ॐ सं सर्वात्मकं, मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि ।

अथ श्री महामृत्युंजय-जप-मंत्रः

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । भूर्भुवःस्वरोंसःजूंह्रौं ॐ ॥ १ ॥

एतद् यथासंख्यं जपित्वा पुनर्न्यास कृत्वा जपं भगवन्महामृत्युंजय देवतायै समर्पयेत् ॥

इस मंत्र का यथा संख्या जप करे पुनः न्यास करे और जप भगवान्मृत्यञ्जय रुद्रदेवता के दक्षिण हस्त में समर्पण करे।

प्रार्थना—गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः ॥

क्षमाप्रार्थना—करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्व मेतत् क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो!

अनेन श्री महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्री महामृत्युंजय साम्बसदाशिवः प्रीयतां नमम–(से जल छोड़े)।

अनेन जप सांगता सिध्यर्थं यथा कामनाद्रव्येण महामृत्युंजय मंत्रेण जपदशांश हवनं, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

इति काशीनाथशर्मा गौड़ कृत सविधि महामृत्युंजय जपविधान समाप्त ॥

॥ अथ महामृत्युञ्जय कवचम् ॥

भैरव उवाच—

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युंजयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम् ॥ १ ॥

श्री भैरव जी ने कहा—हे महेश्वरि ! इस परम ऐश्वर्यवान् कवच को मेरे मुख से सुनो। इस अद्भूत महामृत्युंजय कवच को किसी को न दे ॥ १ ॥

यं धृत्वा च पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम् ।
त्रैलोक्याधिपतिभूत्वा सुखितोऽस्मि महेवरि ॥ २ ॥

इस उत्तम कवच को जो धारण करे, पढ़े, या सुनेगा, वह त्रैलोक्य का मालिक होकर सुख से रहेगा ॥ २ ॥

तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने ।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥ ३ ॥

हे वरानने ! उसका वर्णन तुम्हारी प्रीति देखकर करता हूँ। यह परम तत्व है किसी भी दुरात्मा को नहीं देना बताना चाहिये ॥ ३ ॥

विनियोग पढ़कर जल गिरावे—

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ॥ ॐ बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकम हौमिति तत्त्वं श्री चतुर्वर्ग फल साधनार्थं पाठे विनियोगः ॥

ध्यानं—चन्द्र मण्डल मध्यस्थे रुद्र माले विचित्रिते।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोपि जीविति ॥ १ ॥

चन्द्रमण्डल मध्य में धारण किये हुए विचित्र माला धारण किये रुद्र का जो चिन्तन करता है उसे मृत्यु प्राप्त होने पर भी जीवन मिल जाता है ॥ १ ॥

ॐ जूं सः शिरः पातु देवो मृत्युंजयोमम।
श्री शिवो वै लालटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः॥ २ ॥

ॐ जूं सः ह्रौं बीजरूपी शिव शिर में निवास करें श्री शिव ललाट में, ॐ सदाशिव भौंः में ॥२॥

नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दीमेवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद्गण्डौ नासा में त्रिपुरान्तकः ॥ ३ ॥

नीलकण्ठ नेत्रो में कपर्दी कानों में। गण्डस्थ में त्रिलोचन, नासा में त्रिपुरांतक ॥३॥

मुखं पीयूषघट् भृदोष्ठौ में कृतिकाम्बरः।
हनुं में हाटकेशानो मुखं वटुकभैरवः ॥ ४ ॥

मुख में अमृतघट रूपी शिव, ओष्ठों में कृत्तिकाम्बर। ठोड़ी में हाटकेश्वर, मुख में बटुक भैरवः ॥ ४ ॥

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कंन्धौ स्कंदपितापातु हस्तौ मे गिरिशोवतु ॥५ ॥

कन्ध में कालमथन, गले में गणप्रिय। स्कंधप्रदेश में स्कंदपिता, हाथ में गिरीश ॥ ५ ॥

नखान्मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलि संयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम ॥ ६ ॥

पादो की संयुक्त अंगुलिसहित नखों में गिरिजानाथ। स्तनों में तारापतिः वक्षस्थल में पशुपति ॥ ६ ॥

कुक्षिं कुबेरवदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्वं पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥ ७ ॥

कुक्षि में वरदेने वाले कुबेर, पार्श्व मंडल में मारशासन, ॥ नाभि स्थान में शर्वः, पृष्ठ स्थान में शूली ॥ ७ ॥

शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः ।
कटिं कालान्तक पायाद् उरुमेंधकघातकः ॥८॥

जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घे मे कालभैरवः ॥
गुल्फौ पायाज्जटाधारी-पादौ मृत्युंजयोऽवतु ॥६॥

लिंग स्थान में शंकर, गुदा स्थान में गुह्यकबल्लभ । कटि में कालान्तक, ऊरू में अंधक घात ॥८॥

जानु में जागरूक, जङ्घे में कालभैरवः । गुल्फ स्थान में जटाधारी, पादस्थान में मृत्युंजय ॥६॥

पादादि मूर्द्धापर्यन्तं सद्योजातो ममावतु ।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ॥१०॥

पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः ॥११॥

ऐशान्यामीश्वरं पायादाग्नेयामग्निलोचनः।
नैऋत्यां शंभुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ॥१२॥

पादसे मूर्द्धा पर्यन्त सद्योजातः। रक्षाहीन, नामहीन शरीर का अमृतेश्वर ॥१०॥
पूर्व बलविकरण, दक्षिणे कालशासन, पश्चिम में पार्वती नाथ, उत्तर में मनोन्मन ॥११॥
ऐशान्य दिशा में ईश्वरः। आग्नेय में अग्निलोचन। नैऋत्य में शंभु। वायव्य मे वायुवाहन ॥१२॥

ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः।
दश दिक्षु सदा पातु महामृत्युंजयश्चमाम् ॥१३॥
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये।
पायादों जू महारुद्रो देवदेवो दशाक्षर ॥१४॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्यान्हे भैरवोऽवतु।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥१५॥

ऊर्ध्व स्थान का बलप्रमथन, पाताल का परमेश्वर, दशो दिशाओं की रक्षा महामृत्युंजय करें ॥१३॥

रणे-राजकुल में, जूवा, विषम समय, प्राणसंकट के समय। ॐ जूं महारूद्रो देवदेवो दशक्षर रूप रक्षा करें ॥१४॥

प्रभात समय ब्रह्मा, मध्यान्ह में भैरव, सायंकाल सर्वेश्वर, रात्रिकाल में नित्यचेतन रूप रक्षा करे ॥१५॥

अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः ।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युंजयः ॥१६॥

अर्धरात्रि में महादेव, निशा के अन्त में महोदय। सर्वदा सब स्थानों में ॐ जूं सः ह्रौं यह मृत्युंजय मंत्रात्मक देव रक्षा करें ॥१६॥

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषुदुर्लभम् ।
सर्वमंत्रमयं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम् ॥१७॥

पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ।
य इदं च पठेन्मंत्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥१८॥

तस्य हस्ते महादेवि त्र्यंबकस्याष्टसिद्धयः ।
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वाशत्रूं जयं लभेत् ॥१६॥

यह तीनों लोकों में पुण्यप्रद दुर्लभ मृत्युंजय कवच सर्वमंत्रमय गुप्त से भी गुप्त तीनों लोकों में हं ॥१७॥

यह पुण्य से भी पुण्यप्रद दिव्य देवो में देवाधिपति मृत्युंजय का मंत्र कवच का पाठ करैं ॥१८॥

उसके हाथ में हे महादेवि ! त्र्यंबक की अष्टसिद्धि प्राप्त होती है । युद्ध में धारण करने से, युद्ध में बिचरता हुआ शत्रुओं का नाश करके जय प्राप्त करता है ॥१६॥

जपं कृत्वा गृहे देवि स प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा ॥ २० ॥
दुर्भिक्षे शत्रु संहारे पठेत्कवचमादरात् ।
सर्वं तत्प्रशमं याति मृत्युंजय प्रसादतः ॥ २१ ॥

धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः ।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः ॥ २२ ॥

जय प्राप्त करके गृह में पुनः सुख जिस प्रकार मिलता है। महाभय, महारोग, महामारी भय से ॥ २० ॥

दुर्भिक्ष, शत्रुसंहार के समय इस कवच का आदर-सम्मान के साथ पाठ करे ।२१।

धन-पुत्र-सुख, लक्ष्मी सुख, आरोग्य सुख सर्व सम्पति का सुख साधक को प्राप्त होता रहता है यह कवच सद्यः फलकारी है इसमें संशय नहीं है ॥ २२ ॥

इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युंजयस्य तु ।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥२३॥

यह महा पुण्यकारी गुप्त सिद्धिप्रद गोपनीय महामृत्युंजय कवच उस तरह से गुप्त रखने योग्य है जिस तरह अपनी योनि को गुप्त रखा जाता है ॥ २३ ॥

॥ काशीनाथ शर्मा द्वारा महामृत्युंजय कवच भा० टी० समाप्त ॥

अथ महामृत्युञ्जय स्तोत्र भाषाटीका

ॐ नमो मृत्युंजयाय नमः

नन्दिकेश्वर उवाच—

कैलासस्योत्तरे शृङ्गे शुद्ध-स्फटिक-सन्निभे ।
तमोगुणविहीने तु जरा-मृत्यु-विवर्जिते ॥ १ ॥

सर्वार्थसम्पदाधारे सर्वज्ञानकृतालये ।
कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीनं सदाशिवम् ॥ २ ॥

पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः ।
सर्वार्थसम्पदाधारो ब्रह्मलोक-पितामहः ॥ ३ ॥

नन्दिकेश्वर बोले—कि कैलाश पर्वत के उत्तरी चोटी पर शुद्ध स्फटिक तुल्य सत्व, रजगुण से युक्त वृद्धावस्था और मृत्युजित ॥ १ ॥

धर्म, अर्थ, काम मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय के आधार, समस्तज्ञान के भण्डार–श्री शिव जी महाराज ध्यानमुद्रा में बैठे हुए हैं–उनसे नम्रभाव से दोनों हाथों से प्रणाम करते हुए ब्रह्मा जी ने साष्टांग दण्डवत किया और पूछा–

ब्रह्मोवाच-

केनोपायेन देवेश ! चिरायुर्लोमशोऽभवत् ।
तन्मे ब्रूहि महेशान ! लोकानां हितकाम्यया ॥ ४ ॥

ब्रह्मा बोले—हे देवों के देव महादेव जी लोमश ऋषी को दीर्घजीवन कैसे प्राप्त हुआ इसे संसार के हित के लिये कहने की कृपा करें ।

सदाशिव उवाच

शृणु ब्रह्मन् ! प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः ।
सञ्जातः कर्मणा येन व्याधि-मृत्यु-विवर्जितः ॥ ५ ॥
तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघ-परिप्लुते ।
कृतान्तभय-नाशाय स्तुतो मृत्युञ्जयः शिवः ॥ ६ ॥
तस्य सङ्कीर्त्तनान्नित्यं मुनिर्मृत्युविवर्जितः ।
तमेव कीर्तयन् ब्रह्मन् ! मृत्युं जेतुं न संशयः ॥ ७ ॥

महादेव जी ने उत्तर दिया—हे ब्रह्मा जिसके करने से लोमश मुनि दीर्घजीवी हुए उसे कहता हूँ आप सुनें ॥५॥

लोमश ऋषि ने—अगाध और अथाह समुद्र में कण्ठ तक जल में खड़े होकर भय के नाश के लिये श्री मृत्युंजय महादेव की स्तुति की ॥६॥

उन मृत्युंजय शिव भगवान की स्तुति से ही यमराज का भय छूट गया और मृत्यु को जीत लिया हे ब्रह्मन् मृत्युंजय की आराधना मृत्यु को जीतती है ॥७॥

लोमश उवाच

देवाधिदेव ! देवेश ! सर्वप्राणभृताम्वर ! ।
प्राणिनामपि नाथस्त्वं मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥८॥
देहिनां जीवभूतोऽसि जीवो जीवस्य कारणम् ।
जगतां रक्षकस्त्वं वै मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥९॥
हेमाद्रिशिखराकारं सुधावीचिमनोहरम् ।
पुण्डरीकपरंज्योतिर्मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥१०॥

लोमश ऋषि ने कहा—हे देवो के देव महादेव ! सर्वप्राणियों के प्राण, और उनके नाथ श्री मृत्युंजय आपको मेरा नमस्कार है ॥८॥

हे देव ! समस्त प्राणियों के उत्पत्ति, स्थिति एवं संहारक एकमात्र आप ही हैं। हे मृत्युंजय आपको प्रणाम है ॥९॥

हे देव ! आप हिम के उन्नत शिखर के आकार वाले हैं। अमृत तरंगों के समान सुन्दर वर्ण वाले आप ही हैं। एवं श्वेत कमल की शुभ्रज्योति रूप श्वेतांग आप ही हैं। मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥१०॥

ध्यानाधारं महाज्ञानं सर्वज्ञानैककारणम् ।
परित्राणासि लोकानां मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥

योगियों के ध्यान के आधार महाज्ञानी, समस्तज्ञान के कारण, त्रिलोकी की रक्षा करने वाले आप ही हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ ११ ॥

निहता येन कालेन स देवाऽसुर-मानुषाः ।
गन्धर्वाऽप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा ॥ १२ ॥
साध्याश्च वसवो रुद्रास्तथाऽश्विनिसुतावुभौ ।
मरुतश्च दिशो नागाः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥ १३ ॥
जितःसोऽपि त्वया ध्यायन् मृत्युञ्जय!नमोऽस्तुते ॥ १४ ॥

देव, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, अप्सरा, सिद्ध, विद्याधर ॥ १२ ॥

साध्यदेव अष्टवसु, रुद्र (एकादशरुद्र) अश्विनि कुमार के दोनों पुत्र; मरुत (वायु), १० दिशायें, पर्वत, स्थावर एवं जंगम ॥ १३ ॥

आदि ने आपकी ही कृपा से मृत्यु पर विजय प्राप्त की । हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १४ ॥

ये ध्यायन्ति परां मूर्तिं पूजयन्त्यमरादयः ।
न ते मृत्युवशं यान्ति मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥
त्वमोङ्कारोऽसि वेदानां देवानां च सदा शिवः ।
आधारशक्तिः शक्तीनां मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥
स्थावरे जङ्गमे वाऽपि यावत्तिष्ठति देहगः ।
जीवत्यपत्यलोकोऽयं मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥

समस्त देवादि गण आपकी परम मूर्ति का ध्यान करके मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं । हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १५ ॥

वेदों में ॐकार रूप आप ही हो, देवों में आपका सदाशिव रूप, और सम्पूर्ण शक्तियों के आधार आप ही हैं । हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १६ ॥

देहधरने वाले, चराचर अपना जीवन आपकी ही कृपा से धरते हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १७ ॥

सोम-सूर्या-ऽग्नि-मध्यस्थ व्योमव्यापिन् सदाशिवः ।
कालत्रय महाकाल मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥
प्रबुद्धे चाऽप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसज्जगत् ।
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥
व्योम्नि त्वं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥

चन्द्र सूर्य और अग्नि के मध्य स्थित रहने वाले आकाश के सदृश व्यापक रूप वाले, हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १८ ॥

जाग्रत, सुषुप्तावस्था में जगत की सृष्टि करने वाले सृष्टि रूप आप ही हो। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ १९ ॥

आकाश रूप में आकाश में, तेजरूप से तेज में, ज्ञानरूप से ज्ञानियों के मध्य आप ही हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ २० ॥

जगज्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः ।
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥
नेता त्वमिन्द्रियाणां च सर्वज्ञानप्रबोधकः ।
साङ्ख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २२ ॥
रूपातीतः सुरूपश्च पिण्डस्थपदमेव च ।
चतुर्योगकलाधार ! मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २३ ॥
रेचके वह्निरूपोऽसि सोमरूपोऽसि पूरके ।
कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २४ ॥

समस्त संसार में जीव एवं प्राण स्वरूप आप ही हैं। जगत की सृष्टि करने वाले आप ही हैं। सभी तीर्थों के कारण रूप आप ही हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥ २१ ॥

सभी इन्द्रियों के नियन्ता, समस्त ज्ञान के दाता, सांख्य, योग, और हंस श्रेष्ठ आप हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२२॥

रूपातीत, सुन्दरस्वरूप, पिण्ड और चारों योग रूपी कलाओं के आधार आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२३॥

प्राणायाम में—रेचक में वह्नि रूप, पूरक में सोम रूप, कुम्भक में शिव रूप आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२४॥

क्षयं करोपि पापानां पुण्यानामपि वर्द्धनम् ।
हेतुस्त्वं श्रेयसां नित्यं मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥

सर्वमायाकलातीत ! सर्वेन्द्रियपरावर !।
सर्वेन्द्रियकलाधीश ! मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २६ ॥

रूपं गन्धो रसः स्पर्शः शब्दः संस्कार एव च ।
त्वत्तः प्रकाश एतेषां मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २७ ॥

चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर !।
भावाऽभावपरिच्छिन्न मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २८ ॥

पापों के क्षयकर्त्ता—पुण्यों की वृद्धि कारक श्रेय ऐश्वर्यादि के कारण आप ही हैं। हे महामृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२५॥

सब माया में अतीत कला रूप, इन्द्रियों में सर्वश्रेष्ठ, सर्व इन्द्रियों की कला के स्वामी आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२६॥

हे देव ! आप से ही रूप, रस गन्ध, स्पर्श शब्द और संस्कार प्रकाशमान होते हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२७॥

हे कारणेश्वर ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चतुर्विध सृष्टि की उत्पत्ति के कारण भाव (नाम ६) अभाव (नाम १) सब सात होते हैं उनमें भी आप ही उपस्थित हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२८॥

त्वमेको निष्कलो लोके सकले भुवनत्रये ।
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ २९ ॥

त्वं प्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम् ।
सत्त्वं रजस्तमस्त्वं हि मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ३० ॥

त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः ।
अष्टात्रिंशत्कलानाथ मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ३१ ॥

सर्वेन्द्रियाणामाधारः सर्वभूतगुणाश्रयः ।
सर्वज्ञानमयानन्तः । मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ३२ ॥

आप अकेले ही तीनों लोकों में व्याप्त हैं। आपका स्वरूप अत्यन्त सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥२९॥

आप ज्ञान के रूप में त्रिलोकी को उद्बोधन करते हैं। आधार देते हैं और बीज रूप मंत्र हैं। आप ही का स्वरूप सत्व-रज-तम है। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥३०॥

आप, सोम (चंद्र) दिनेश (सूर्य) और प्रकृति के आत्मा स्वरूप हो और अड़तिस कलाओं के अधिपति हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है ॥३१॥

सब प्राणियों की इन्द्रियों के आधार (रक्षक) सब प्राणियों में गुण के दाता समस्त अनन्त ज्ञान के भण्डार हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥३२॥

त्वमात्मा सर्वभूतानां गणानां त्वमधीश्वरः।
सर्वानन्दमयाधार ! मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ३३ ॥
त्वं यज्ञः सर्वयज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणम्।
शब्दब्रह्मत्वमोङ्कार ! मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ॥ ३४ ॥

प्राणियों की आत्मा, गुणों के ईश्वर, सब आनन्दों के आधार आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आप को नमस्कार है ॥३३॥

यज्ञों में यज्ञरूप, ज्ञान स्वरूप ज्ञान में ॐ कार रूप शब्द में आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है ॥३४॥

सदाशिव उवाच **(फलश्रुतिः)**

एवं सङ्कीर्त्तयेद् यस्तु शुचिस्तद्गतमानसः ।
भक्त्या शृणोति यो ब्रह्मन् न स मृत्युवशो भवेत् ॥ ३५ ॥
न च मृत्युभयं यस्य प्राप्तकालं च लङ्घयेत् ।
अपमृत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः ॥ ३६ ॥
व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत् ।
प्रत्यासन्नतरे काले शतैकावर्तने कृते ॥ ३७ ॥

महादेव ने कहा–हे ब्रह्मा जो-जो शुद्धमन भक्ति के साथ इस स्तोत्र का पाठ करें या श्रवण करे तो वह मृत्यु को जीत लेता है। मृत्यु के वश नहीं रहता ॥३५॥

उस साधक को मृत्युभय नहीं रहता। इस श्लोक का पाठ करने से अपमृत्यु का भय भी दूर होता है—इसमें संशय नहीं है ॥३६॥

सौ पाठ करने से सभी व्याधियों, महामारियों का भय नहीं होता है ॥३७॥

मृत्युर्न जायते तस्य रोगान् मुञ्चति निश्चितम् ।
पञ्चम्यां वा दशम्यां वा पौर्णमास्यामथाऽपि वा ॥३८॥

शतमावर्तयेद् यस्तु शतवर्षं स जीवति ।
तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते श्रियमुत्तमाम् ॥३९॥

त्रिविधं नाशयेत् पापं मनो-वाक्-कायसम्भवम् ।
अभिचाराणि कर्माणि कर्माण्याथर्वणानि च ।
क्षीयन्ते नाऽत्र सन्देहो दुःस्वप्नं च विनश्यति ॥४०॥

मृत्यु का भय नहीं होता, रोग का भी भय कभी नहीं होता यदि पंचमी, दशमी पूर्णिमा को भी इसका सौ पाठ करते हैं । ॥३८॥

वह सौ वर्ष तक निश्चित जीवित रहते हैं, तेजस्वी बल से सम्पन्न और श्रीमान रहते हैं ॥३९॥

इस स्तोत्र का पाठ मन वाणी शरीर के त्रिविध ताप रूपी जो पाप हैं उनका नाश करता है अभिचार-दुःस्वप्न आदि सब नष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं हैं ॥४०॥

इदं रहस्यं परमं देवदेवस्य शूलिनः।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥४१॥

यह देवाधिदेव महादेव का अत्यन्त गुप्त रहस्य है। इसके पाठ करने से सुनने से सभी प्रकार के दुःख दुःस्वप्न का नाश-सर्वविघ्नों का नाश होता है। और पुण्य की वृद्धि होती है ॥४१॥

इति श्री शिव ब्रह्मसंवादे मृत्युञ्जयस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ शताक्षरागायत्री मंत्र-जप-विधिः

विनियोग—(जल लेकर छोड़े)

अस्य शताक्षरा गायत्री मंत्रस्य विश्वामित्र मरीचि कश्यप वशिष्ठ ऋषयो गायत्री त्रिष्टुप् अनुष्टुप छन्दांसि सवितृजातवेदस्त्र्यम्बका देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्ट शान्तये जपे विनियोगः।

न्यासः—विश्वामित्र मरीचि कश्यप वशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप् छन्देभ्यो नमः सुखे। सवितृ जातवेदस्त्रयम्बक देवेभ्यो नमः हृदये। गायत्र्यक्षराणि बीजानि गुह्ये। त्रिष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।

ॐ तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमाहि हृदयाय नमः ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मारातीयतोनिदहातिवेदः शिखायै वौषट्। ॐ स नः

पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः कवचाय हुं । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ उर्व्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । अस्त्रायफट् ।

ध्यानम्—— स्मर्तव्याखिल लोकवर्त्ति सततं यज्जगमस्थावरम् ।
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्च विहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति ॥
यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते ।
तद्वस्तुस्थिति सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महं ॥१॥

एवं ध्यात्वा शताक्षरीं भापयेत् ।

अथ होमार्थ शताक्षरागायत्री मन्त्रः-

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ जातवेद से सुनवाम सोम मारातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ना वेव । सिन्धु दुरितात्यग्निः । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वा रुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मु क्षीयमा मृतात् स्वाहा ।

॥ काशीनाथ शर्मा गौड़ कृत महामृत्युञ्जयस्तोत्र की हिन्दी भाषाटीका समाप्त ॥

चमत्कारिक यंत्र-मंत्र-तंत्र एवं टोटके

इस विषय की आप अनेकों पुस्तकें देखी होगी, परन्तु इस पुस्तक में यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधन विधि ऐसी सरल रीति से लिखी गयी है कि नियमत: करने पर सफलता प्राप्ति में किंचित मात्र भी सन्देह नहीं है। इसके मन्त्र-तन्त्र तथा टोटकों से आप कठिन से कठिन कार्यों को बड़े आसानी से सिद्ध कर सकते हैं। इसके अचम्भे में डालने वाले करामातों से आप वशीकरण, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि सभी कुछ सिद्ध करके काफी यश व नाम कमा सकते हैं।

मूल्य केवल रु० १५-०० मात्र, डाक व्यय अलग।

श्री हनुमद् उपासना (हनुमद् रहस्य)

इस पुस्तक में श्री हनुमान जी का जीवन चरित्र तथा गूढ़ रहस्यों की जानकारी एवं यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के साथ ही अनेकानेक हनुमद् स्तोत्रों का समावेश किया गया है। यह पुस्तक हनुमान जी के उपासकों के लिये अत्यन्त उत्तम तथा उपादेय है। इस पुस्तक की सहायता से आप हनुमान जी को प्रसन्न करके मनोवाञ्छित कामनायें प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य रु० १०-२५ मात्र, डाक व्यय अलग।
